eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

वर्तमान परिपेक्ष्य में श्री अरविन्द घोष की शैक्षिक विचारा धारा का समीक्षात्मक अध्ययन

नीलम देवी[1], डा0 अमित भारद्वाज[2]
[1]शोधकत्री, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

प्रस्तुत शोध का मुख्य उदेश्य अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना है। अरविन्द घोष जी एक महान दार्शनिक और विचार वाले व्यक्ति थे। आज से वर्षो पहले दिये गये उनके शिक्षा पर विचार आज के समय में शिक्षा पर काफी प्रभाव पड़ा हैं। इसका मुख्य आधार शैक्षिक विचार व साहित्य हैं।

श्री अरविन्द जी के बहुत से विचार आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुरूप हैं। उनके विचारों के माध्यम से शिक्षा को सरल बनाया जा सकता है और बच्चों को भविष्य के लिये तैयार किया जा सकता हैं। प्रस्तुत शोध में आज की शिक्षा प्रणाली को सरल और बहतर बनाने के लिये श्री अरविन्द जी की शिक्षा दर्शन की आवश्यकता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द– वर्तमान परिपेक्ष्य, श्री अरविन्द घोष, शैक्षिक विचारा धारा, वर्तमान शिक्षा प्रणाली

Introduction

व्यक्ति जीवन दर्शन अपने जीवन दर्शन से दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करता है। स्वामी विवेकानन्द के समान ही अरविन्द घोष जी ने अपने जीवन दर्शन और शैक्षिक विचारों के माध्यम से व्यक्ति के जीवन को दर्शाया है। अरविन्द घोष एक महान दर्शन शास्त्र के प्रणेता थे। वे शिक्षा को उन्नति के मार्ग पर ले जाना चाहते थे, उनका मानना था कि शिक्षा सिर्फ सूचनाओं का एकत्र करना नहीं है, सूचनाओं के आधार पर ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। वह कहते है कि सच्ची और जीवित शिक्षा वह नहीं है जिसके द्वारा बच्चों की छिपी हुई शक्तियों का विकास होता है। उसे अपने जीवन, दिमाग, राष्ट्र की आत्मा एवं मानवता की आत्मा और मस्तिष्क से उचित सम्बन्ध जोड़ने में सहायक होता है। शारिरिक विकास के लिये शारिरिक बुद्धि होना जरूरी है तभी अध्यात्मिक विकास सम्भव है।

आज वर्षो बाद उनकी शिक्षा का प्रभाव वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस तरह से हम कह सकते है उनके बहुत समय पहले से सुझाये गये शिक्षा के उद्देश्य आज की शिक्षा प्रणाली में विशेष रूप से अपनाये जाये। जिसे देखते हुये हम कह सकते है उनकी भविष्य के प्रति सोच बहुत ही सही थी। आज के युग में हमारी शिक्षा प्रणाली की जो गिरी हुई स्थिति हैं उसको दूर करने के लियें उस महान विभूति द्वारा शिक्षा के मूल्यों को अपनाना बहुत आवश्यक है।

समस्या कथन – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्री अरविन्द घोष की शैक्षिक विचारधारा का समीक्षात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य श्री अरविन्द घोष के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना घोष जी के शैक्षिक विचारों का आज के समय शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीय स्त्रोत का उपयोग किया गया है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

अध्ययन की सीमायें– प्रस्तुत शोध में अरविन्द घोष जी के केवल शैक्षिक दर्शन का ही अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीय स्त्रोत साहित्य का उपयोग किया गया है।

श्री अरविन्द घोष का शैक्षिक दर्शन– श्री अरविन्द जी मानते थे कि जीव की आत्मा में ज्ञान सदा सोने के अवस्था में दिखाई नही देता है। शिक्षा का आधार अन्तःकरण है उनका मानना है कि सच्ची और वास्तविक शिक्षा वह है जो मानव के अन्दर छुपी हुई शक्ति को विकसित करती है। वह उनसे पूर्ण रूप से लाभान्वित होता है अतःकरण के 4 मुख्य अंग है जो इस प्रकार है–

1. चित्
2. बुद्धि
3. मनस्
4. ज्ञान

उनके अनुसार मानव की इन शक्तियों में क्रमिक विकास होता है अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह इन शक्तियों को विकसित कर सके। केवल ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा नहीं है सच्ची शिक्षा वही है जिसमें मानव का पूर्ण विकास करने की क्षमता हो।

अरविन्द घोष जी के पाठ्यक्रम– भौतिक विषय, मातृभाषा एवं राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय महत्व की भाषायें इतिहास, भूगोल, समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र, गणित, विज्ञान, मनोविज्ञान, वेद, गीता, उपनिषद, देशों के धर्म एवं दर्शन। आध्यात्मिक क्रियाऐं, भजन, कीर्तन, ध्यान एंव योग विषय पाठ्यक्रम में पूर्ण रूप से सम्मिलित होने चाहिए।

प्राथमिक स्तर– मातृभाषा– अग्रेंजी, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं चित्रकला और खेलकूद, व्यायाम, बागवानी, भजन, कीर्तन आदि जो प्राथमिक स्तर में महत्वपूर्ण मानते थे।
माध्यमिक स्तर– मातृभाषा– अग्रेंजी, फ्रैंच, साहित्य, गणित, भौतिक विज्ञान, रासायन विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान आदि।
उच्च स्तर– मातृभाषा– अग्रेंजी, फ्रैंच, साहित्य, गणित, भौतिक विज्ञान, रासायन विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान आदि।
श्री अरविन्द जी सभी विषयों को रटकर याद करने पर जोर नही देते थे उनके हिसाब से विधार्थी करके सीखना चाहिए। उनके शिक्षण विधियों में मौलिकता थी। वह मातृभाषा पर जोर देते थे। अगर बच्चों को क्रिया के द्वारा सीखने का अवसर देना इस बात की सच्चाई है कि बच्चों में काम करने की लगन पैदा होगी इससे वह अपने भविष्य में उचित प्रकार से रोजी–रोटी कमाकर अच्छे से जीवन व्यतीत कर सकते है।

बालक के विकास में विद्यालय की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः विद्यालय में इस प्रकार का वातावरण बनाना चाहिए जो बालक पड़ने के लिए तैयार हो सके।

शिक्षा के अन्य पक्ष– नारी शिक्षा व समाज शिक्षा व चरीत्र निर्माण जो कि आज के समय के अनुसार जरूरी है शिक्षा के बिना देश कि तरक्की नहीं हो सकती इसें बढ़ाने में इनका बहुत बड़ा योगदान हैं। उन्होने राष्ट्रीय शिक्षा की पूरी रूप रेखा तैयार की नैतिकता और धर्म में अरविन्द जी की बहुत रूचि थी। इनका

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

मत था धर्म के अभाव में मनुष्य अध्यात्मिक स्वरूप को नहीं पहचान सकता। अरविन्द जी ने व्यवसाहिक शिक्षा को बढ़ाबा देने की बात कहीं। जो गलतिंया आज की शिक्षा में हैं इनको दूर करने का प्रसाय अरविन्द जी के विचारों से किया जा सकता है।

श्री अरविन्द जी का जीवन दर्शन– शिक्षा के द्वारा ही मानव का विकास होता है शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नहीं होता है। अपितु बालक के मानसिक संस्कारों को परिस्कृत करना भी है। अतः अन्त में शिक्षा संस्कार के रूप में रह जाता है, लेकिन वेदो में प्रधान अंग शिक्षा ही था इसी प्रकार उपनिषद काल में जो शिक्षा विकसित हुई उसका स्वरूप दार्शनिक अधिक था।

श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन के समझने के लिये उनके दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना आवश्यक है। श्री अरविन्द दर्शन का सिद्वान्त यह है कि जड़ और आत्मा दोनो ही सत्य है। दोनो में से हम किसी एक की अपेक्षा नही कर सकते। श्री अरविन्द कोई रहस्य वादी नहीं वर्णन सुप्रसिद्व शंकर और ब्राडले के जोड़ के तार्किक तथा सुप्रसिद्व दार्शनिक काण्ड और होगल के समान बुद्धि जीव भी थे।

निष्कर्ष– अरविन्द घोष जी एक योगी और महान दार्शनिक विचार के थे। जो राष्ट्रीय शिक्षा देना नहीं चाहते थे और देश को विकसित करने में अपना योगदान आज भी दे रहे है। पांडिचेरी अन्तराष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र शखाऐं देश विदेश में प्रचलित है। अरविन्द जी द्वारा बतायें गये शिक्षा के उद्देश्य सही मार्ग पर ला सकते है जोकि व्यक्ति के विकास के लिऐ आवश्यक है। इसी तथ्य में श्री अरविन्द की महानता निहित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

श्री अरविन्द (1994) मानव चक्र पाण्डिचेरी श्री अरविन्द आश्रम।

श्री अरविन्द (1994) श्री अरविन्द अपने विषय में पाण्डिचेरी श्री अरविन्द आश्रम।

नवजात (2001) दिव्य शरीर में दिव्य जीवन पाण्डिचेरी श्री अरविन्द सोसाइटी।

यागी सुरेश चन्द्र (2002) अदिति अर्ध वार्षिक प्रस्तुति, मेरठ श्री अरविन्द सोसाइटी समिति।

छोटे नारायण शर्मा (2002) श्री अरविन्द, संक्षिप्त जीवनी, नई दिल्ली श्री नवीन वाहरी, मदर्स फर्म।

मैत्रा एस0के0 (2004) श्री अरविन्द दर्शन की भूमिका पाण्डिचेरी श्री मीरा ट्रस्ट